पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.01.2016 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

आर्य महासम्मेलन तैयारी हेतु

रविवार, 10 जनवरी 2016 को

दक्षिण दिल्ली कार्यकर्ता बैठक

प्रातः 11.30 बजे, आर्य समाज,
मालवीय नगर, नई दिल्ली

एवम्

पश्चिमी दिल्ली कार्यकर्ता बैठक

सायं 4.00 बजे, आर्य समाज,
पश्चिम विहार, दिल्ली

कृप्या अपने निकट की बैठक
में अवश्य पंहुचे।

वर्ष-32 अंक-13 पौष-2072 दयानन्दाब्द 191 01 जनवरी से 15 जनवरी 2016 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.01.2016, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में आर्य समाज अपनी भूमिका निभाये- **-सत्येन्द्र जैन** (स्वास्थ्य मन्त्री,दिल्ली सरकार)

देश की आजादी में स्वामी श्रद्धानन्द का अहम योगदान-**गोपाल राय (परिवहन मन्त्री, दिल्ली सरकार)**

दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सत्येन्द्र जैन व श्री गोपाल राय (परिवहन मन्त्री,दिल्ली सरकार) को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, चौ. लाजपतराय आर्य, सुरेश आर्य, विनोद भूपल, सुरेन्द्र कोहली, ओमप्रकाश जैन व महेन्द्र भाई।

नई दिल्ली। बुधवार, 23 दिसम्बर 2015, आर्य समाज की युवा संस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में स्वास्थ्य मन्त्री निवास, राजनिवास मार्ग, नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार के संस्थापक, मूर्धन्य आर्य संन्यासी ''स्वामी श्रद्वानन्द जी का 89 वां बलिदान दिवस'' समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में दिल्ली के कौने कौने से सैंकड़ो आर्य प्रतिनिधियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री गोपाल राय (परिवहन मन्त्री, दिल्ली सरकार) ने कहा कि स्वामी श्रद्वानन्द जी ने गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किया व समान शिक्षा पद्धति को बढ़ावा दिया, यह सामाजिक समरसता का एक प्रेरक उदाहरण है । श्री गोपाल राय ने आगे कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही ओर स्वामी श्रद्धानन्द ने अग्रेंजी हकुमत से डट कर लोहा लिया, वह एक निर्भीक संन्यासी और महान क्रांतिकारी थे, हमें आज उनके जीवन से प्रेरणा लेने का संकल्प लेना चाहिये।

श्री सत्येन्द्र जैन (स्वास्थ्य मन्त्री,दिल्ली सरकार) ने कहा कि महर्षि दयानन्द महान क्रांतिकारी थे, हम भी उनसे प्रेरणा लेते हैं, उन्होंने अपने समय में समाज में व्यापत कुरीतियों के विरूद्ध डट कर लोहा लिया, पाखण्ड अन्धविश्वास के विरूद्ध जनजागरण किया, आज फिर आर्य जनों को समाज में व्यापत बुराईयों, पाखण्डों के विरूद्ध जनता को सजक करने का अभियान चलाने की आवश्यकता है। समारोह अध्यक्ष चौ. लाजपतराय आर्य (करनाल) ने कहा कि आर्य समाज पुनः अपनी गौरवशाली परम्परा को निभा कर सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वाह करेगा।

समारोह के संयोजक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्वानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर देश की एकता और अखण्डता के लिए सब आर्य जन एक जुट हों।

बहिन स्वर्णा आर्या व संजय आर्य के मधुर भजन हुए व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने ओजस्वी विचार रखे। समारोह का संचालन परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने किया। स्वागताध्यक्ष विनोद भूपल ने सभी का आभार व्यक्त किया। गुरूकुल खेड़ाखुर्द के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया । सभी आर्य जनों ने स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार दिल्ली को ''राष्ट्रीय स्मारक'' घोषित करने की सर्वसम्मति से मांग की । आर्य नेता महेन्द्र भाई, धर्मपाल आर्य, गायत्री मीना, सुरेन्द्र कोहली, ओमप्रकाश जैन, यशोवीर आर्य, राजेश मेहन्दीरता, रणसिह राणा, ओम सपरा, प्रवीन आर्य, देवेन्द्र भगत, सुरेश आर्य, मनोज मान, रामकुमार सिंह, अरूण आर्य, माधवसिंह, कै.अशोक गुलाटी, गोपाल जैन, रवि चड्डा, विम्मी अरोड़ा आदि उपस्थित थे।

आर्य समाज, सैक्टर-22, चण्डीगढ़ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

रविवार, 27 दिसम्बर 2015, आर्य समाज, सैक्टर–22,चण्डीगढ़ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोल्लास मनाया गया। चित्र में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् चण्डीगढ़ शाखा का श्री नरेन्द्र आहुजा 'विवेक' को प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत करते राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, साथ में स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक सभा), श्री सोमदत शास्त्री, प्रधान समाज), रामकुमार सिंह, आचार्य रणवीर शास्त्री आदि व द्वितीय चित्र–स्वामी आर्य वेश जी उद्बोधन देते हुए, मंच पर बायें से आचार्य सन्तराम आर्य,रामकुमार सिंह, धर्मपाल आर्य, डा.अनिल आर्य, आचार्य रणवीर शास्त्री, स्वामी विश्वानन्द जी, प्रदीप छाबड़ा आदि। श्री सोमदत शास्त्री ने कुशल मंच संचालन किया। श्री प्रेमचन्द गुप्ता,श्री अशोक आर्य, श्री विनोद आर्य, श्री माधव सिंह,श्री नरेश आर्य आदि भी उपस्थित थे।

'यज्ञ का महत्व एवं याज्ञिकों को इससे होने वाले लाभ'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, ईश्वरीय ज्ञान है जिसे सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया था। ईश्वर प्रदत्त यह ज्ञान सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद सभी मनुष्यों के लिए यज्ञ करने का विधान करते हैं। ऋग्वेद के मन्त्र 1ध्13ध्12 में 'स्वाहा यज्ञं कृणोतन' कहकर ईश्वर ने स्वाहापूर्वक यज्ञ करने की आज्ञा दी है। ऋग्वेद के मन्त्र 2ध्2ध्1 में 'यज्ञेन वर्धत जातवेदसम्' कहकर यज्ञ से अग्नि को बढ़ाने की आज्ञा है। इसी प्रकार यजुर्वेद के मन्त्र 3ध्1 में 'समिधाग्निं दुवस्यत धृतैर्बोधयतातिथिम्' कहकर समिधा से अग्नि को पूजित करने व घृत से उस अग्निदेव अतिथि को जगाने की आज्ञा है। 'सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन' (यजुर्वेद 3ध्2) के द्वारा आज्ञा है कि सुप्रदीप्त अग्निज्वाला में तप्त घृत की आहुति दो। यह संसार ईश्वर का बनाया हुआ है और सभी मनुष्यों व प्राणियों को उसी ने जन्म दिया है। अतः ईश्वर सभी मनुष्यादि प्राणियों का माता, पिता व आचार्य है। उसकी आज्ञा का पालन करना ही मनुष्य का धर्म है और न करना ही अधर्म है। इस आधार पर यज्ञ करना मनुष्य धर्म और जो नहीं करता वह अधर्म करता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त यज्ञों की चर्चा की है। अग्निहोत्र एक नैत्यिक कर्तव्य है जो शास्त्र–मर्यादा के अनुसार सभी को करना होता है। अन्य यज्ञों को करने के सभी अधिकारी हों, ऐसा नहीं है। लाभों का ज्ञान न होने पर भी वैदिक विधान होने से ही अग्निहोत्र सबको करणीय है। लाभ जानकर किया जाए तो उसमें अधिक श्रद्धा होती है। उन लाभों को प्राप्त करने की प्रेरणा भी मिलती है और उसके लिए मनुष्य प्रयत्न भी करता है। अतः वेदादि शास्त्रों ने भी तथा स्वामी दयानन्द जी ने भी यज्ञ एवं अग्निहोत्र के अनेकानेक लाभ बताए हैं। इन लाभों में अनागत रोगों से बचाव, प्राप्त रोगों का दूर होना, वायु–जल की शुद्धि, ओषधि–पत्र–पुष्प–फल–कन्दमूल आदि की पुष्टि, स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य, बल, इन्द्रिय–सामर्थ्य, पाप–मोचन, शत्रु–पराजय, तेज, यश, सदविचार, सत्कर्मों में प्रेरणा, गृह–रक्षा, भद्र–भाव, कल्याण, सच्चारित्र्य, सर्वविध सुख आदि दर्शाए गए हैं। वन्ध्यात्व–निवारण, पुत्र–प्राप्ति, वृष्टि, बुद्धिवृद्धि, मोक्ष आदि फलों का भी प्रतिपादन किया गया है। यहां शंका यह हो सकती है कि क्योंकि प्रत्येक अग्निहोत्री को ये फल प्राप्त नहीं होते, अतः यह फल श्रुति मिथ्या है। इसलिए इसका विवचेन किया जाना आवश्यक है।

यज्ञ, अग्निहोत्र या होम के लाभों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम प्रकार के वे लाभ हैं, जो होम से स्वतः प्राप्त हो सकते हैं, यथा वायुशुद्धि, जलशुद्धि, स्वास्थ्य–प्राप्ति, इन्द्रिय–सामर्थ्य, दीर्घायुष्य आदि। यदि अग्नि में यथोचित मात्रा में सुगन्धित, मिष्ट, पुष्टिप्रद एवं रोगहर द्रव्यों का होम किया गया है, तो यजमान चाहे या न चाहे, इन लाभों के प्राप्त होने का अवसर रहता ही हैं। शीत ऋतु में गुड़, मेथी, सोंठ, अजवाइन, गूगल जैसी साधारण वस्तुओं के होम से ही गृह–सदस्यों को सर्दी के अनेक रोगों से बचाव और छुटकारा मिलता देखा गया है। दूसरे प्रकार के लाभ वे हैं, जो अग्निहोत्री यजमान के इच्छा, प्रेरणाग्रहण एवं प्रयत्न पर निर्भर हैं। यदि यजमान मन्त्रों के अर्थ का अनुसरण करता हुआ परमेश्वर के एवं परमेश्वररचित यज्ञाग्नि के परमेश्वरकृत गुण–कर्म–स्वभाव का चिन्तन करता हुआ उन्हें अपने अन्दर धारण करने का व्रत लेता है और तदर्थ प्रयत्न करता है, तो वह सन्मार्ग पर चलने की सद्बुद्धि प्राप्त करेगा, पापकर्मों से बचेगा, सदाचारी बनेगा, तेजस्वी एवं यशस्वी होगा और मोक्षप्राप्ति के अनुरूप कर्म करने की प्रेरणा लेगा, तो मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। यदि कोई यजमान इन लाभों को पाने का प्रयत्न ही नहीं करता, सूखे मन से आहुतिमात्र देता है, फलतः उसे यह लाभ प्राप्त नहीं होते, तो उसमें यज्ञ का दोष नही है।

जहां तक बड़े–बड़े रोगों को दूर करने, महामारियां रोकने आदि का प्रश्न है, प्राचीन काल में इस प्रकार के यज्ञ होते रहे हैं। पुत्र–प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टियां भी की जाती रही हैं। इनकी सफलता कुछ तो मनोबल, श्रद्धा एवं आशावादिता पर निर्भर है, दूसरे अधिक योगदान इस बात का है कि कौन–सी ओषधियों से होम किया जाता है। जैसे अन्य चिकित्सा–पद्धतियों आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, जल–चिकित्सा, ऐलोपैथी, होम्योपैथी आदि हैं, वैसे ही अग्निहोत्र–चिकित्सा भी एक वैज्ञानिक पद्धति है। अग्निहोत्र–चिकित्सा द्वारा वेदोक्त रोगकृमि–विनाश, ज्वर–चिकित्सा, उन्माद–चिकित्सा, गण्डमाला–चिकित्सा एवं गर्भदोष–चिकित्सा की जाती है जो सफल परिणामदायक होती है। इस विषय में मार्गदर्शन हेतु यज्ञ विषयक ग्रन्थों का अनुशीलन किया जाना चाहिये। इस विषय से सम्बन्धित आर्यजगत के विद्वान डा. रामनाथ वेदालंकार जी की "यज्ञ मीमांसा" पुस्तक विशेष रूप से लाभदायक है। इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने यज्ञ के विभिन्न पक्षों पर सात अध्यायों में बहुमूल्य जानकारी दी है। पहला अध्याय यज्ञ और अग्निहोत्र विषय में सामान्य विचार से सम्बन्धित है। दूसरा अध्याय वैदिक यज्ञ–चिकित्सा पर है। तीसरा अग्निहोत्र के प्रेरक तथा लाभ–प्रतिपादक वेदमन्त्रों पर, चौथा अग्निहोत्र की विधियों तथा मन्त्रों की व्याख्या, पांचवा अध्याय बृहद् यज्ञ के विशिष्ट मन्त्रों पर तथा षष्ठ अध्याय आत्मिक अग्निहोत्र एवं अग्निहोत्र के भावनात्मक लाभों पर है। अन्तिम सातवां अध्याय यज्ञ एवं अग्निहोत्र–विषयक सूक्तियों पर है। इस ग्रन्थ का अध्ययन करने से यज्ञ विषयक सभी पक्षों का ज्ञान होता है। यह ग्रन्थ सभी यज्ञ प्रेमी पाठकों के लिए पढ़ने योग्य है। यज्ञ के प्रति पाठकों में जागृति उत्पन्न हो और वह स्वस्थ रहते हुए यशस्वी जीवन व्यतीत करें और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हों, इस लिए यह कुछ संक्षिप्त उल्लेख किया है। इस लेख की समस्त सामग्री डा. रामनाथ वेदालंकार जी की पुस्तक यज्ञमीमांसा पर आधारित है। उनका पुण्यस्मरण कर उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

दैनिक अग्निहोत्र नैत्यिक कर्तव्य है। कुछ लोग घरों में नियम से दोनों समय या एक समय दैनिक अग्निहोत्र करते हैं। कुछ लोग आर्यसमाजों में होनेवाले सामूहिक दैनिक या साप्ताहिक अग्निहोत्र में सम्मिलित होते हैं, घर पर अग्निहोत्र नहीं करते। स्वामी दयानन्द ने अपनी 'संस्कारविधि' पुस्तक में घृत की प्रत्येक आहुति न्यूनतम छः माशे की लिखी है। वह धृत भी कस्तूरी, केसर, चन्दन, कपूर, जावित्री, इलायची आदि से सुगन्धित किया होना चाहिए। इसके अतिरिक्त सुगन्धि, मिष्ट, पुष्ट एवं रोगनाशक द्रव्यों की हवन–सामग्री होनी चाहिये। समिधाएं भी चन्दन, पलाश, आम आदि की होनी चाहिएं। उन्होंने अग्निहोत्र के जो लाभ अपने ग्रन्थों में लिखे हैं, वे घर–घर होने वाले इसी प्रकार के अग्निहोत्र की दृष्टि में रखकर हैं। इस प्रकार का अग्निहोत्र हो, तो उसमें दोनों समय का मिलाकर काफी दैनिक व्यय होने का अनुमान है। इतना व्यय करने का सामर्थ्य और उत्साह विरलों का ही हो सकता है। ऐसी स्थिति में श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार जैसा भी बन पड़े होम करना उचित है। हव्य चारों प्रकार के होने चाहिएं, जिसमें वायु मण्डल सुगन्धित तथा रोगहर ओषधियों के अणुओं से युक्त हो तथा उसमें श्वास लेने से लाभ पहुंचे। जो एक काल के ही व्रत का निर्वाह करना चाहें, वे वैसा कर सकते हैं। अग्नि प्रज्जवलित रहे ओर धुआं न उठे, ऐसा प्रयास होना चाहिए। यह विचार पूज्य आचार्यप्रवर पं. रामनाथ वेदालंकार जी के हैं। आशा है कि पाठक यज्ञ विषयक इस लेख में प्रस्तुत विचारों से लाभान्वित होंगे।

'शहीद ऊधम सिंह जी की जयंती पर उनकी देशभक्ति के जज्बे को प्रणाम'

आज देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले देशभक्त अमर शहीद श्री ऊधम सिंह जी की 116 वीं जयन्ती है। शहीद ऊधम सिंह जी ने मानवता के इतिहास की एक निकृष्टतम नरसंहार की घटना जलियावाला बाग नरसंहार काण्ड के मुख्य दोषी पजांब के तत्कालीन गर्वनर माइकेल ओडायर को लन्दन में जाकर 13 मार्च, सन् 1940 को गोली मार कर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया था। देश की आजादी के दीवाने और भारत माता के वीर देशभक्त महान पुत्र शहीद ऊधम सिंह पर देश को गर्व है। आज का दिन देश के प्रति उनके जज्बे और कुर्बानी को याद करने व उससे प्रेरणा लेने का दिन है।

शहीद ऊधम सिंह, पूर्वनाम शेर सिंह, का जन्म जिला संगरूर पंजाब के सुनाम स्थान पर 26 दिसम्बर, सन् 1899 को हुआ था। श्री चुहड़ सिंह उनके पिता थे जो रेलवे में नौकरी करते थे। आपकी माताजी का देहान्त सन 1901 में आपकी 2 वर्ष की अवस्था में हो गया था। सन् 1907 में आपके पिता भी दिवगंत हो गये थे। आठ वर्षीय ऊधम सिंह जी व उनके भाई मुक्तासिंह का पालन अमृतसर के केन्द्रीय खालसा अनाथालय, पुतलीघर में हुआ जहां आप सन् 1919 तक रहे। 14 अप्रैल सन् 1919 को बैसाखी थी। इस दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में रालेट एक्ट के विरोध में सभा हुई जिसमें बड़ी संख्या में स्त्री–पुरुष और बच्चे सम्मिलित थे। इस सभा में बिना किसी चेतावनी दिये अंहिसक व शान्त देशवासियों पर ब्रिगेडियर जनरल डायर के आदेशों से उनके सैनिकों ने अन्धाधुन्ध गोलिया चलाई जिससे वहां 379 लोग मरे तथा लगभग 1200 लोग घायल हो गये। सरदार ऊधम सिंह वहां अपने एक साथी के साथ लोगों को जल पिलाने का काम कर रहे थे। इस नरसंहार को आपने अपनी आंखों से देखा। इस घटना से 20 वर्षीय युवक ऊधम सिंह का खून खौल उठा। उन्होंने घायलों की सेवा की। वहां से बाहर निकाल कर उन्हें सेवा व राहत शिविरों में पहुंचाया। बाद में इस अमानवीय घटना से सन्तप्त उन्होंने प्रतीज्ञा की कि इस घटना के दोषी व्यक्ति को उसकी जान लेकर सबक सिखायेंगे। इसके बाद यही संकल्प इनके जीवन का लक्ष्य बन गया।

अपनी शपथ वा प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए ऊधम सिंह जी लन्दन पहुंचे। वहां सौभाग्य से उन्हें अपना उद्देश्य पूरा करने का अवसर मिल गया। 13 मार्च, 1940 को लन्दन के कैक्सन हाल में ईस्ट इंडिया एसोसियेशन तथा केन्द्रीय एशियन सोसायटी की एक बैठक थी जिसमें माइकेल ओडायर को भाषण देना था। ऊधम सिंह जी ने अपनी रिवालवर को अपने कोट की जेब में छुपाया जो उन्हें मालिसियान पंजाब के श्री पूरन सिंह बोघन से मिली थी। इसके बाद वह कैक्सन हाल में प्रविष्ट हुए और वहां एक सीट पर बैठ गये। जैसे ही मीटिंग समाप्त हुई, सरदार ऊधम सिंह ने अपनी पिस्तौल से माइकेल ओडायर पर दो फायर किये जिससे वह वहीं पर ढ़ेर हो गये। इस घटना में माइकेल ओडायर के समीप विद्यमान तीन अन्य व्यक्ति भी घायल हुए। घटना के बाद ऊधम सिंह जी ने घटना स्थल से भागने का प्रयास नहीं किया, वह वहीं पर खड़े रहे और स्वयं को गिरफ्तार करा दिया। इस प्रकार उन्होंने 14 अप्रैल, 1919 को जालियावालां बाग नरसंहार की अमानवीय घटना का 21 वर्ष बाद बदला लेकर अमानवीय कार्य करने वाले शासक व शोषक लोगों को देशभक्तों की भावनाओं से परिचित कराया। हमें लगता है कि इस घटना का देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान है। इस घटना ने लन्दन में रह रहे अंग्रेजों को **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान** के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 5, 6, 7 फरवरी 2016 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थानः अजमल खाँ पार्क, करोलबाग, नई दिल्ली-110005

विराट् शोभा यात्राः शुक्रवार 5 फरवरी 2016, प्रातः 10:30 बजे

रूटः अजमलखाँ पार्क से चलकर फैज रोड, मॉडल बस्ती, ईस्ट पार्क रोड, डोरीवालान, देशबन्धु गुप्ता मार्ग, आर्य समाज रोड, करोल बाग, मास्टर पृथ्वीनाथ मार्ग होते हुए अजमल खाँ पार्क में दोपहर 1:30 बजे समापन।

मुख्य आकर्षण

* आर्य युवा सम्मेलन
* वेद सम्मेलन
* शिक्षा-संस्कृति रक्षा सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या
* नारी शक्ति सम्मेलन
* राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 3 जनवरी 2016 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्कः श्री आदर्श कुमार-9811440502, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री-9810884124
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 3 जनवरी 2016 तक गोपाल जैन-9810756571, कमल आर्य-9953995003, ऋषिपाल शास्त्री-9891148729, अरुण आर्य-9818530543, जयप्रकाश शास्त्री-9810897878 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल,

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680
E-mail: aryayouthn@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

(पृष्ठ 2 का शेष)

कुछ सोचने पर अवश्य मजबूर किया होगा।

ऊधम सिंह जी की गिरफ्तारी के बाद उन पर मुकदमा चला। 1 अप्रैल, 1940 को औपचारिक रूप से उन पर माइकेल ओडायर की हत्या का आरोप स्थापित किया गया। जेल में रहते हुए उन्होंने 42 दिनों की लम्बी भूख हड़ताल भी की थी जिसे बलात् तोड़ा गया था। 4 जून से उन पर मुकदमा चला और उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। ऊधम सिंह जी ने कोर्ट में अपने बयान में कहा था कि ''मैंने माइकेल ओडायर को मारा है क्योंकि मैं उनसे नफरत करता था। वह मेरे द्वारा की गई इस हत्या के पात्र थे। वह जलियावालां बाग नरसंहार के असली दोषी थे। उन्होंने मेरे देशवासियों की भावनाओं को कुचला, इसलिये मैंने उन्हें कुचल दिया। 21 वर्षों तक मैं उनसे जलियावालां बाग नरसंहार का बदला लेने का प्रयत्न करता रहा। मुझे प्रसन्नता है कि मैंने अपना काम पूरा किया। मुझे मौत का डर नहीं है। मैं अपने देश के लिए शहीद हो रहा हूं। ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत मैंने अपने देशवासियों को भूखे मरते देखा है। मैंने इसके विरुद्ध यह आपत्ति की है, यह मेरा कर्तव्य था। अपनी मातृभूमि के लिए मृत्यु का आलिंगन करने से बड़ा दूसरा और क्या सौभाग्य मेरे लिए हो सकता है?'

ऊधम सिंह जी को 31 जुलाई, 1940 को पेण्टोविली जेल में फांसी दी गई और जेल में ही उन्हें दफना दिया गया। इस प्रकार भारतमाता का वीर सपूत देश की आजादी और भारतीयों के सम्मान के लिए शहीद हो गया। आज उनकी जयन्ती पर हम उन्हें अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इस देश के सभी नागरिक शहीद ऊधम सिंह जी व अन्य क्रान्तिकारियों जैसे हों जायें व भविष्य में भी ऐसे ही हों जिन्हें देश से उनके जैसा ही प्यार हो और उन्हीं की तरह से वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें।

—पताः 196 चुक्खूवाला—2, देहरादून—248001, फोनः09412985121

यमुना नगर, हरियाणा के डा.सतीश बंसल व सौरभ आर्य का अभिनन्दन

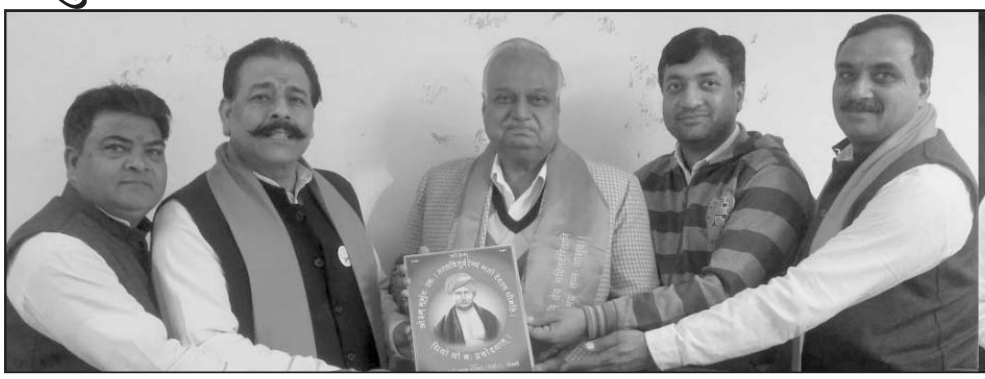

रविवार, 20 दिसम्बर 2015,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् यमुना नगर, हरियाणा के कार्यकम में गुरूकुल यमुना नगर के प्रबन्धक व आर्य समाज, जगाधरी के डा. सतीश बंसल का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य,मोहित आर्य (मन्त्री, आर्य समाज, रेलवे रोड़, यमुना नगर), रामकुमार सिंह व धर्मपाल आर्य। द्वितीय चित्र–श्री सौरभ आर्य (जिला अध्यक्ष,यमुना नगर) का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, रामकुमार सिंह आदि।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर पूनम जैन व स्वर्णा आर्या का अभिनन्दन

बुधवार, 23 दिसम्बर 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर श्रीमती पूनम जैन (धर्मपत्नि श्री सत्येन्द्र जैन, स्वास्थ्य मन्त्री, दिल्ली सरकार) का अभिनन्दन करते बहिन गायत्री मीना, सुषमा अरोड़ा, विम्मी अरोड़ा व रेखा शर्मा। द्वितीय चित्र– बहिन स्वर्णा आर्या का अभिनन्दन करते श्री सत्येन्द्र जैन, डा. अनिल आर्य, योगेन्द्र शर्मा व सुरेश आर्य।

अमेरिका के आर्य नेता रमेश गुप्ता व कनाडा के विश्वेन्दर सूद का अभिनन्दन

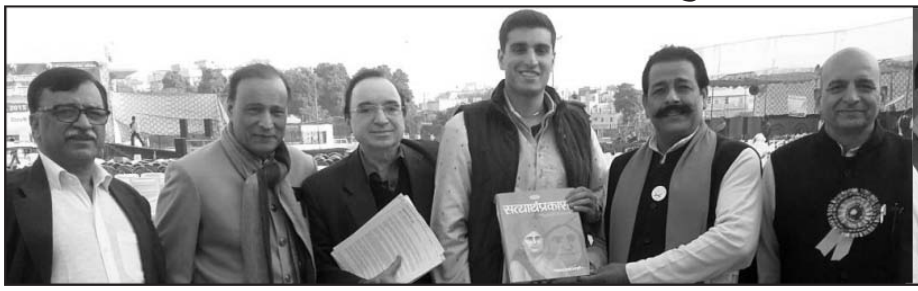

शुक्रवार, 25 दिसम्बर 2015, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर अमेरिका से पधारे श्री रमेश गुप्ता (पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका) व श्री विश्वेन्द्रर सूद (कनाडा) का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, श्री ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट, दिल्ली), पुनीत गुप्ता व आचार्य बलबीर जी। द्वितीय चित्र–रविवार, 27 दिसम्बर 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् अम्बाला के अध्यक्ष श्री अजय गुप्ता व मन्त्री श्री भारत भूषण आर्य को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य, रामकुमार सिंह, धर्मपाल आर्य, दिनेश आर्य, राजकुमार आर्य आदि।

शुक्रवार, 25 दिसम्बर 2015, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित शोभा यात्रा का नेतृत्व करते श्री धर्मपाल आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डा. अनिल आर्य, मेजर डा. रवि कान्त, सुशील आर्य, संजय आर्य आदि। द्वितीय चित्र–रविवार, 6 दिसम्बर 2015, आर्य समाज, कालका जी, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर विजेता बच्चों को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, प्रधान श्री रमेश गाडी, महामन्त्री श्री राकेश भटनागर, श्री ओमप्रकाश छाबड़ा आदि।

कुरूक्षेत्र में गीता जयन्ती सम्पन्न

रविवार, 20 दिसम्बर 2015, वैदिक यज्ञ अनुसंधान समिति के तत्वावधान में विशाल यज्ञ व गीता जयन्ती समारोह का आयोजन कुरूक्षेत्र में किया गया, चित्र में स्वामी आर्य वेश जी, आचार्य कर्मवीर जी, डा.अनिल आर्य व सांसद डा. सत्यपालसिंह आर्य व अल्का सिंह जी। श्री गोपाल शर्मा ने संयोजन किया।

दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु ध्यान दें

दिनांक 5, 6, 7 फरवरी 2016 को दिल्ली में होने वाले अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन व 251 कुण्डीय विराट यज्ञ में दिल्ली के बाहर से पधारने वाले आर्य युवकों व आर्य जनों से अनुरोध है कि कृपया अपनी संख्या व पंहुचने का समय आदि शीघ्र सूचित करें जिससे आवास आदि का सुन्दर प्रबन्ध किया जा सके ओर आपको कोई कष्ट न हो।

— महेन्द्र भाई, फोनः09013137070.

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री बदरीलाल आर्य (उपप्रधान, आर्य समाज, मंगोल पुरी, दिल्ली) का निधन।
2. श्री धर्मपाल आर्य (ससुर प्रि.सरस्वती आर्या, सोनीपत) का निधन।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970